या $\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y} = \frac{MU_z}{P_z}$ = MU per Rupee।

उपर्युक्त समीकरण से स्पष्ट है कि वस्तुओं के सीमान्त उपयोगिता को उनकी सम्बद्ध कीमतों से विभाजित करके उनके प्रति रुपया सीमान्त तुष्टिगुण को निकाला गया है उपभोक्ता तभी सन्तुलन की स्थिति में होगा जबकि वह सभी वस्तुओं के प्रति रुपया एक सा सीमान्त तुष्टिगुण प्राप्त करता है। यदि x वस्तु उपभोक्ता को y वस्तु की अपेक्षा अधिक प्रति रुपये सीमान्त तुष्टिगुण प्रदान करती है तो वह x वस्तु की कुछ इकाइयां अधिक और y वस्तु की कुछ इकाइयां कम खरीद कर अपनी कुल सन्तुष्टि को बढ़ा लेगा। क्योंकि उसे हानि की अपेक्षा लाभ अधिक होगा। परन्तु जब सभी वस्तुओं से प्रति रुपया समान सीमान्त तुष्टिगुण मिल रहा है तो वर्तमान व्यय व्यवस्था में परिवर्तन करना ठीक नहीं होगा क्योंकि ऐसी अवस्था में उपभोक्ता को लाभ से ज्यादा हानि अधिक होगी। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि उपभोक्ता उस समय सन्तुलन की अवस्था में होता है जब उपभोक्ता को एक वस्तु से दूसरी वस्तु में परिवर्तन के लिए कोई प्रेरणा नहीं होती, ऐसा तभी होता है जब व्यय की सभी मदों से उपलब्ध होने वाला प्रति रुपया सीमान्त तुष्टिगुण समान रहता है।

एक उदाहरण के द्वारा इसे और अधिक स्पष्ट कर सकते हैं। नीचे दी हुई सारणी में A वस्तु, B वस्तु, C वस्तुओं की प्रचलित कीमतों एवं उससे प्राप्त सीमान्त तुष्टिगुण को दिखाया गया है

उपयोग की इकाइयों की संख्या	वस्तु A का सीमान्त तुष्टिगुण 120 पैसे प्रति इकाई	वस्तु B का सीमान्त तुष्टिगुण 60 पैसे प्रति इकाई	वस्तु C का सीमान्त तुष्टिगुण 40 पैसे प्रति इकाई
1	280	140	92
2	270	130	86
3	260	120	80
4	250	110	76
5	240	100	72
6	230	90	66

मान लिया जाय कि उपभोक्ता के पास 9 रुपया है। अधिकतम संतुष्टि को देखते हुए उपभोक्ता अपनी आय से 5 इकाई A वस्तु की 3 इकाई B वस्तु की तथा 3 इकाई C वस्तु की खरीदता है। अब प्रश्न यह है कि क्या इस व्यय योजना से उपभोक्ता को अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त हो रही है। या अधिकतम सन्तुष्टि की आधारभूत शर्त पूरी हो रही है अर्थात तीनों वस्तुओं के सम्बन्ध में सीमान्त तुष्टिगुण कीमत अनुपात एक समान है या नहीं! निःसन्देह इस व्यवस्था में यह अनुपात एक समान है!

Scanned with CamScanner

वस्तु A $\frac{240}{120}$ वस्तु B $\frac{120}{60}$ वस्तु C $\frac{80}{40}$ = 2 इकाई उपयोगिता प्रति पैसा

अतः उपभोक्ता अपनी आय की राशि को तीनों वस्तुओं पर इस प्रकार व्यय करता है

A = 5 × 120 पैसे = 600 पैसे + B = 3 × 80 = 180 पैसे + C = 3 × 40 पैसे = 120 पैसे

= 9250

नियम की आलोचना। — परन्तु इस नियम की कुछ आलोचना भी की गई है जो निम्न प्रकार से है

(1) दोषपूर्ण मान्यताएं — इस नियम की आधारभूत मान्यताएं ही दोषपूर्ण है जैसे यह नियम मान कर चलता है कि उपयोगिता को मापा जा सकता है जबकि यह एक मनोवैज्ञानिक विचार है जिसे संख्यात्मक रूप में नहीं मापा जा सकता है। मुद्रा के स्थिर गुण की मान्यता सही नहीं है क्योंकि जैसे-जैसे मुद्रा की मात्रा कम होती जाती है उसकी सीमान्त उपयोगिता बढ़ती जाती है।

(2) वस्तुओं के विभाजन की कठिनाइयां — वस्तुएं इस प्रकार की होती हैं जिनको छोटी छोटी इकाइयों में विभाजित नहीं किया जा सकता है और इस प्रकार वस्तुओं की सीमान्त उपयोगिता नहीं मापी जा सकती है और नहीं इसकी तुलना अन्य वस्तुओं के सीमान्त उपयोगिता से की जा सकती है। उदाहरण के लिए एक हीरे को छोटी-छोटी इकाइयों में विभाजित नहीं किया जा सकता है।

(3) वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन — चूंकि व्यावहारिक जीवन में वस्तुओं की कीमत में प्रायः परिवर्तन होते हैं जिसके कारण उपभोक्ता की सारी उपयोगिता सम्बन्धी गणनाएं बेकार हो जाती हैं और उनके लिए इस नियम का अनुसरण करना कठिन हो जाता है

(4) रीति रिवाज में परिवर्तन — कभी-कभी उपभोक्ता प्रचलित रीति रिवाजों के कारण अधिक उपयोगिता प्रदान करने वाली वस्तुओं को कम उपयोगी वस्तुओं के स्थान पर प्रतिस्थापित नहीं कर पाता है। उदाहरण के लिए धार्मिक अवसरों पर दान दक्षिणा आदि देनी पड़ती है यदि यह रुपया अन्य इच्छाओं पर व्यय किया जाय तो इससे अधिक सन्तुष्टि प्राप्त की जा सकती है।

(5) फैशन में परिवर्तन — फैशन भी इस नियम की क्रियाशीलता में बाधक सिद्ध होता है। फैशन में प्रायः व्यक्ति अधिक उपयोगी वस्तु के स्थान पर कम उपयोगी वस्तु का प्रयोग करता है ऐसी दशा में यह नियम क्रियाशील नहीं हो पाता है।

सम सीमान्त उपयोगिता का महत्व

(1) लेकिन इतनी आलोचनाओं के बाद भी इस सिद्धान्त का बहुत महत्व है। जो कि निम्न प्रकार से है

(1) उपभोग में महत्व — यह नियम स्पष्ट करता है कि एक उपभोक्ता अपने सीमित साधनों से किस प्रकार अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करता है। उपभोक्ता को अधिकतम सन्तुष्टि तभी मिलती है जब वह मुद्रा की इकाई को विभिन्न वस्तुओं में इस प्रकार व्यय करता है कि अन्त में प्रत्येक वस्तु से मिलने वाली सीमान्त उपयोगिता बराबर हो जाय।

(2) उत्पादन में महत्व — यह सिद्धान्त उत्पादकों के लिए भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। प्रत्येक उत्पादक अधिकतम लाभ प्राप्त करना चाहता है। वह उत्पादन के विभिन्न साधनों का उचित मिश्रण करके ही ऐसा कर पाता है। उसे उत्पादन के विभिन्न साधनों को इस प्रकार लगाना चाहिए कि सभी उत्पादकों की सीमान्त उत्पादकता समान हो। सीमान्त उत्पादकता से यहाँ अभिप्राय उस प्रतिफल से है जो साधनों की एक इकाई से प्राप्त होती है

(3) विनिमय में महत्व — विनिमय के क्षेत्र में भी इस सिद्धान्त का बहुत महत्व है। वस्तु विनिमय प्रणाली के अनुसार किये जाने वाले विनिमय में प्रत्येक पक्ष अपने लिए कम उपयोगी वस्तु की जगह अधिक उपयोगी वस्तु प्राप्त करता है। मुद्रा विनिमय प्रणाली में भी विनिमय इसी समय तक चलता है जब तक कि वस्तु से प्राप्त होने वाला गुण इसके लिए दी गई मुद्रा के तुष्टिगुण के बराबर नहीं हो जाता है।

(4) वितरण में महत्व — राष्ट्रीय आय के वितरण की समस्या में इस सिद्धान्त का उपयोग वितरण का सिद्धान्त प्रतिपादित करने के लिए होता है। प्रत्येक उत्पादन के साधनों को उनकी सीमान्त उत्पादकता के अनुरूप पुरस्कार दिया जाता है।

(5) राजस्व में महत्व — राजस्व के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त अधिकतम सामाजिक कल्याण का सिद्धान्त भी सम सीमान्त तुष्टिगुण पर आधारित है। कर के सम्बन्ध में नीति निर्धारण करते समय सरकार को कर इस प्रकार लगाना चाहिए जिससे कर से मिलने वाला सीमान्त तुष्टिगुण अर्थात् होने वाला सीमान्त त्याग के बराबर हो।

सार्वजनिक व्यय के सम्बन्ध में भी सरकार अपनी नीति का निर्धारण इस सिद्धान्त के आधार पर कर सकती है। यदि अ और ब दो सार्वजनिक निर्माण के कार्य हो तो वह उन पर इस प्रकार व्यय करेगी।

$$\frac{\text{अ कार्य से मिलने वाला सीमान्त लाभ}}{\text{अ पर हुआ व्यय}} = \frac{\text{ब कार्य से मिलने वाला सीमान्त लाभ}}{\text{ब पर हुआ व्यय}}$$

यदि अ का अनुपात ब के अनुपात से अधिक है तो सरकार ब से रुपया निकालकर अ पर लगाने लगेगी और यह क्रिया तब तक करेगी जब तक दोनों बराबर न हो जाय। इसी क्रिया को अन्य उपभोगों के साथ भी किया जायगा।

×

Scanned with CamScanner